पाठ – 4.2

गृह–प्रवेश

सतीश जायसवाल

जीवन परिचय

वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार सतीश जायसवाल का जन्म 17 जून 1942 को हुआ। उन्हें रिपोर्ताज, कविता, कहानी तथा विशेषतः संस्मरण और यात्रावृत्तांत लेखन के लिए जाना जाता है। बख्शी सृजनपीठ छत्तीसगढ़ के अध यक्ष रह चुके सतीश जी को पत्रकारिता का द स्टेट्समैन अवार्ड फॉर रूरल रिपोर्टिंग (लगातार दो बार) तथा बनमाली कथा सम्मान प्राप्त है। उनकी प्रमुख प्रकाशित कृतियाँ हैं –

कहानी संकलन :– जाने किस बंदरगाह पर, धूप ताप , कहाँ से कहाँ, नदी नहा रही थी। बाल साहित्य :– भले घर का लड़का, हाथियों का गुस्सा, संपादन :– छत्तीसगढ़ के शताधिक कवियों का प्रतिनिधि संकलन– कविता छत्तीसगढ़। संस्मरण – कील काँटे कमन्द। वर्तमान में आप बिलासपुर छ.ग. में निवासरत हैं।

सतीश जायसवाल की कविता गृह प्रवेश में एकाकी जीवन जी रहे व्यक्ति को अपने एकांत के सन्नाटे को तोड़ने का उपक्रम करते दिखाया गया है। कविता में ऊपरी दिखावे से भरा प्रेम, थके हारे व्यक्ति की व्यथा, एकाकीपन में जीवन का ठहराव तथा पक्षियों के प्रति प्रेम और अंत में सपनों में ही सही 'घर का 'घर' हो जाना' चित्रित हुआ है। कविता इन अनुभवों से गुजरते हुए पाठक को संवेदना से जोड़े रखती है।

गृह–प्रवेश

पहले लटकाई मैंने
धान की बालियों वाली झालर
दरवाजे की चौखट पर
फिर भेजा चिड़ियों को न्योता
गृह प्रवेश का विधिवत।

चिड़ियों ने भी
न्योते को मान दिया,

आईं, दाना चुगा।
और लौट गईं
बाहर ही बाहर दरवाजे से
वैसे
समारोह के बाद जैसे
लौटते हैं
आमंत्रित अतिथि सभी।

छूट गया घर
सूने का सूना,
पहले से भी वीराना
किसी रंग बिरंगे
और उमंग भरे
मेले से लौटने पर
एक आदमी जैसे।
थका हारा और बिलकुल अकेला।

तब लटकाया मैंने एक आईना
भीतर
अंतःपुर की दीवार पर।

आईने के काँच में झाँका
तो एक से दो हुआ,
संतोष हुआ।
अपनी ही छाया ने समझाया
सूनापन कुछ तो दूर हुआ।
ऐसे ही
नींद में
सपनों का साथ जुड़ जाएगा
धीरे–धीरे घर भी
घर हो जाएगा।

सपने में
आवाज दे रही थी
चिड़िया,
जगा रही थी
सुबह सबेरे।
आईने पर खटखट
जैसे खटखटा रही थी
घर का दरवाजा।

किसी अतिथि की तरह
बाहर ही बाहर से
नहीं लौटी इस बार
चिड़िया,

अब अंतःपुर में
चिड़िया
काँच के आईने में
अपने को निहारती
शृंगार करती
और एक घर सजाती।

घर
धीरे–धीरे घर बन रहा था।

सतीश जायसवाल

अभ्यास

पाठ से

1. कवि चिड़ियों को बुलाने के लिए क्या–क्या करता है?
2. चिड़ियों के दाना चुगकर लौट जाने पर कवि कैसा महसूस करता है?
3. सूनापन दूर करने के लिए कवि कौन–कौन से उपाय करता है?
4. कवि द्वारा घर के आंतरिक भाग अथवा अंतःपुर में आईना लटकाने का आशय क्या है?
5. 'घर धीरे–धीरे घर बन रहा था', यह पंक्ति घर में किन बदलावों और उम्मीदों की ओर संकेत करती है?
6. कविता में अतिथियों और चिड़ियों में क्या समानताएँ बताई गईं हैं?

पाठ से आगे

1. आप पक्षियों को अपने घर आमंत्रित करने के लिए किस प्रकार का उपाय करना चाहेंगे? लिखिए।
2. आईने में अपना बिंब देखने के बाद आपके मन में किस–किस तरह के विचार आते हैं? उन विचारों को लिखिए।

F7B7LP

3. एक एकाकी व्यक्ति के घर और एक परिवार वाले घर में आप किस प्रकार का फर्क देखते हैं? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
4. किसी विवाह या उत्सव के आयोजन के बाद जो दृश्य आप देखते हैं और आपके मन में जो भाव उभरते हैं उनका वर्णन कीजिए।
5. गृह प्रवेश के बारे में आप क्या जानते हैं? कविता में वर्णित गृह प्रवेश का दृश्य, परंपरागत रूप से समाज में होने वाले गृह प्रवेश से किस प्रकार भिन्न है?

भाषा के बारे में

1. 'बालियाँ' शब्द से दो वाक्य इस प्रकार बनाइए कि इस शब्द के अलग–अलग अर्थ प्रकट हों।
2. गृह प्रवेश, न्योता, झालर, उमंग, मेला, उत्सव, वीराना, रंग–बिरंगे, शृंगार, चौखट, अतिथि, सपना और संतोष इन 12 शब्दों का प्रयोग करते हुए एक प्रसंग–वर्णन या लघु कहानी लिखिए।

F7K3NC

3. कविता से 10 विशेषण शब्दों की पहचान कर उन्हें अलग कर लिखिए। आप उन विशेषण शब्दों के लिए कौन से विशेष्य शब्द लिखना चाहेंगे, आपके द्वारा कल्पित विशेष्य शब्दों से उन विशेषणों को मिलाकर लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. आप अपने आस–पास अकेले रह रहे किसी बुजुर्ग महिला या पुरुष को देखकर लिखिए कि उन्हें किस तरह की मुश्किलों का सामना अपने दैनिक जीवन में करना पड़ता है? सामाजिक रूप से एक संवेदनशील व्यक्ति के रूप में हमारी क्या भूमिका हो सकती है?

2. हर सुबह और शाम चिड़ियों की चहचहाहट से वातावरण में एक तरह का संगीत छिड़ जाता है। इसी तरह की और भी घटनाएँ प्रकृति में होती होंगी। उन घटनाओं को अपने शब्दों में लिखिए।

3. एक एकाकी व्यक्ति के घर और एक परिवार वाले घर में आप किस प्रकार का फर्क देखते हैं? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

F7TYPZ

●●●